(जुलाई–दिसम्बर 2020 से लागू)

एम०ए०, हिन्दी साहित्य, तृतीय सेमेस्टर

MHL-E317

नाटक और रंगमंच

पूर्णांक 100 | सत्रांत परीक्षा 70 अंक

क्रेडिट – 6 | सतत आन्तरिक मूल्यांकन 30 अंक

निर्धारित पाठ्यक्रम

इकाई – 1 (व्याख्या)

1. अजात शत्रु – जयशंकर प्रसाद
2. कोमल गांधार – डॉ० शंकर शेष
3. कौमुदी महोत्सव – डॉ० राम कुमार वर्मा
4. अंधा युग – धर्मवीर भारती

इकाई – 2

- नाटक और रंगमंच का स्वरूप
- नाट्योत्पत्ति सम्बन्धी विविध मत
- नाट्य अध्ययन का स्वरूप
  - नाटक का विधागत वैशिष्ट्य
  - नाटक और रंगमंच का अंतःसंबंध
  - नाटक में दृश्य और श्रव्य तत्वों का समायोजन

इकाई – 3 नाट्य–भेद

– भारतीय रूपक–उपरूपकों के भेद (सामान्य परिचय)

– पारम्परिक नाट्य–रूप : रामलीला, रासलीला, स्वांग, नौटंकी, माच, ख्याल, विदेसिया आदि।

– पाश्चात्य नाटक (सामान्य परिचय)

इकाई – 4

- नाट्य–विधान : भारतीय एवं पाश्चात्य दृष्टि से नाट्य तत्वों का विस्तृत विवेचन
- रंगमंच के प्रकार, रंगशिल्प, रंग संप्रेषण के विविध घटक (मूर्त एवं अमूर्त)
- विश्व के प्रमुख रंग चिंतक : भरत, स्तानिस्लाव्स्की, ब्रेख्त के अभिनय–सिद्धान्त।

इकाई – 5

- हिन्दी नाटक और रंगमंच का संक्षिप्त इतिहास–

  – नाटक का विकास : भारतेन्दु युग, प्रसाद युग, स्वातंत्र्योत्तर काल, नया नाटक।

  रंगमंच : लोक–नाट्य (व्यावसायिक, अव्यावसायिक)

  – पारसी, पृथ्वी थियेटर, इप्टा, प्रमुख सरकारी रंग संस्थाएँ, नुक्कड़ नाटक।
- हिन्दी नाट्य–चिंतन – भारतेंदु, जयशंकर प्रसाद, मोहन राकेश।

संदर्भ ग्रन्थ–

1. हिन्दी नाटक : उद्भव और विकास – डॉ० दशरथ ओझा
2. आधुनिक भारतीय नाट्य विमर्श – जयदेव तनेजा
3. बीसवीं शताब्दी का हिन्दी नाटक और रंगमंच – गिरीश रस्तोगी
4. नाटक तथा रंग परिकल्पना – गिरीश रस्तोगी